Nai Dunia (Indore), 8th June 2021, Page-2

सिमरोल कैंपस **उपचारित पानी का होगा उपयोग, एलईडी व सोलर पैनल से बिजली की होगी बचत**

आइआइटी इंदौर में तैयार हो रहा पर्यावरण हितैषी आडिटोरियम

उदय प्रताप सिंह • इंदौर

आइआइटी इंदौर के सिमरोल परिसर में पर्यावरण हितैषी आडिटोरियम तैयार किया जा रहा है। यहां पर मध्य भारत का सबसे बड़ा 2500 दर्शक क्षमता का आडिटोरियम बनाया जा रहा है जिसकी लागत 130 करोड़ रुपये होगी। इसके अतिरिक्त यहां पर 500 दर्शक क्षमता के दो व 300 दर्शक क्षमता के दो अन्य आडिटोरियम भी बनाए जा रहे हैं। इन आडिटोरियमों की खूबी यह है कि इनमें ऊर्जा की बचत होगी। यहां के आडिटोरियम में उपयोग किए जाने वाले एयर कूलर में बारिश के पानी के अलावा परिसर का उपयोग किए हुए पानी को उपचारित कर उपयोग किया जाएगा। यदि तीन घंटे आडिटोरियम का उपयोग किया जाएगा तो उसमें करीब 10 हजार लीटर उपचारित पानी उपयोग होगा। इस आडिटोरियम को दिल्ली की एजेंसी तैयार कर रही है और इसका वास्तु

आइआइटी में 2500 दर्शकों की क्षमता वाला बन रहा आडिटोरियम। • नईदुनिया

इंदौर की एक कंपनी द्वारा किया जा रहा है। आर्किटेक्ट संजय गोयल के मुताबिक आडिटोरियम में जो इंतजाम किए जा रहे हैं उससे 15 से 20 प्रतिशत ऊर्जा की बचत होगी। यदि तीन घंटे आडिटोरियम चालू रहेगा तो 70 से 80 यूनिट बिजली प्रतिघंटे खर्च होगी और करीब एक हजार रुपये का बिल होगा। इससे तीन घंटे में करीब 500 रुपये की बचत मौजूदा सिस्टम से होगी।

आडिटोरियम को ठंडा रखने के लिए भी विशेष इंतजाम : आर्किटेक्ट संजय गोयल के मुताबिक मंच पर एलईडी लाइट का प्रयोग किया जा रहा है। ऐसे में पहले आडिटोरियम में जिन लाइटों का उपयोग किया जाता था उसके मुकाबले बिजली के खर्च में 50 फीसद की बचत होगी। एयरकंडीशनिंग पर लोड कम हो इसके लिए आडिटोरियम में बाहर की ओर डीजीयू ग्लास यूनिट का उपयोग किया है। इसका फायदा यह होगा कि यदि बाहर तापमान 40 डिग्री हो तो बिना एसी चलाए भी तापमान अंदर तापमान 30 से 32 डिग्री होगा। सामान्यत: अन्य आडिटोरियम की छत जीआई और स्टील स्ट्रक्चर से बनाई जाती है लेकिन इस आडिटोरियम की आरसीसी की छत बनाई जा रही है। इससे गर्मी में आडिटोरियम का तापमान कम होगा और एसी की कूलिंग पर असर पड़ेगा। इसके अलावा यहां पर सेपरेट डक्टिंग बनाई जा रही है जिससे की बाहर की ताजी हवा को अंदर लाया जा सके। आडिटोरियम की छत पर सोलर पैनल लगाए जा रहे हैं जिससे चार से पांच किलोवाट बिजली का उत्पादन होगा। इसका उपयोग आडिटोरियम के अंदर की लाइटों में होगा। आडिटोरियम के छोटे कमरों व बेक स्टेज में वीआरएफ तकनीक का उपयोग किया जाएगा। ग्रीन रूम के 10 कमरों में सिंगल यूनिट एसी आपरेट होगा।

> आइआइटी अपने नवनिर्मित भवनों में फ्लाइऐश ईंटों, गैर विषैले पेंट और साल्वेंट जैसे पर्यावरण के अनुकूल निर्माण सामग्री का इस्तेमाल कर रहा है। इमारतों की छतों पर सौर ऊर्जा प्लांट भी विकसित कर रहे हैं। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए दीर्घकालिक स्थायी समाधान के रूप में एक नया वैकल्पिक पाठ्यक्रम भी तैयार किया जा रहा है।
>
> **- प्रोफेसर नीलेश कुमार जैन**
> (कार्यवाहक) निदेशक, आइआइटी इंदौर